# वीर हनुमान सिंह

वीर हनुमान सिंह अंग्रेज लस्कर में सैनिक थे । अंग्रेजों के जुल्म के खिलाफ और भारत की आजादी के लिए उन्होंने अंग्रेजों से बगावत की और अपने सारजेंट को गोली मार कर स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े । उन्होंने भूमिगत होकर स्वतंत्रता आंदोलन का संचालन किया ।

अंग्रेज उन्हें अपराधी मानते थे, लेकिन अंत तक वे वीर हनुमान सिंह को नहीं पकड़ सके । वीर हनुमान सिंह की देशप्रेम की भावना से प्रेरित होकर अन्य कई सैनिकों ने भी उनका साथ दिया और अंग्रेजों की खिलाफत की ।

योगदान कितना अल्प क्यों न रहा हो, प्रायोजन की पवित्रता अपनी धरती और बंधु –बांधवों को आतताइयों से मुक्त करने की तड़प वीर हनुमान सिंह को महान स्वातंत्र्य सैनिक निरूपित करने हेतु पर्याप्त है । हम वीर हनुमान सिंह जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते है ।

# वीर हनुमान सिंह पुरस्कार वर्ष 2012 : प्रमुख नियम

**प्रत्येक वर्ष केवल एक प्रशिक्षक एवं एक निर्णायक को पुरस्कार दिया जाएगा ।**

## प्रशिक्षकों के लिए नियम

प्रशिक्षक की कम से कम पॉच एवं अधिक से अधिक दस वर्षो की उपलब्धियों का आंकलन किया जाएगा ।

## व्यक्तिगत खेल के संबंध में

राष्ट्रीय चैम्पियनशिप या राष्ट्रीय खेल में पॉच पदक तीन पृथक–पृथक वर्षो में, या तीन पृथक–पृथक खिलाड़ियों द्वारा प्राप्त की गई हो ।

या

प्रशिक्षक द्वारा प्रषिक्षित राज्य के कम से कम तीन खिलाड़ियों ने अंतर्राष्ट्रीय प्रतियेागिता में देश का प्रतिनिधित्व किया हो ।

## दलीय खेलों के संबंध में

राष्ट्रीय चैम्पियनशिप या राष्ट्रीय खेल में पॉच पृथक–पृथक पदक जीतने वाले दलों में प्रशिक्षक द्वारा प्रशिक्षित खिलाड़ियों की संख्या प्रत्येक दल में कम से कम 40 प्रतिशत हो ।

या

प्रशिक्षक द्वारा प्रशिक्षित राज्य के कम से कम सात खिलाड़ियों ने अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में देश का प्रतिनिधित्व किया हो ।

ऐसे प्रशिक्षक जिन्हें मध्यप्रदेश शासन द्वारा प्रषिक्षण कार्य के लिए विश्वामित्र पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है वे इस पुरस्कार के लिए तभी पात्र होंगे जब छत्तीसगढ की ओर से खेलते हुए उनके द्वारा प्रशिक्षित खिलाड़ियों ने उपरोक्तानुसार उपलब्धियॉ प्राप्त की हो तथा प्रशिक्षक ने छत्तीसगढ की ओर से खेलने वाले खिलाड़ियों को विगत पॉच वर्षों में निरंतर प्रशिक्षक प्रदान किया हो।

ऐसे प्रशिक्षक जो उपलब्धि वर्षो एवं पुरस्कार वर्ष में संबंधित राज्य खेल संघ के पदाधिकारी रहे हो वे इस पुरस्कार के पात्र नहीं होंगे । यह कंडिका उन प्रशिक्षकों पर लागू नहीं होगी जिन प्रशिक्षकों को राष्ट्रीय खेल संघ द्वारा भारतीय दल का प्रशिक्षक नियुक्त/मनोनीत किया गया हो तथा प्रशिक्षक द्वारा भारतीय दल को प्रशिक्षित करने के पश्चात संबंधित अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भारतीय दल के साथ भाग लिया हो ।

## निर्णायकों के लिए नियम

1. राज्य के निर्णायक द्वारा कम से कम विगत पांच वर्षो से अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में निर्णयन कार्य किया जा रहा हो।

2. निर्णायक की कम से कम पांच एवं अधिक से अधिक दस वर्षो की उपलब्धियों का आंकलन किया जाएगा।

3. उसने राष्ट्रीय महासंघ या आयोजन समिति या संबंधित अंतर्राष्ट्रीय खेल महासंघ द्वारा निर्णयन कार्य हेतु आमंत्रित किए जाने पर तीन पृथक–पृथक अवसरों पर विदेशों में आयोजित, एक ही खेल की, तीन पृथक–पृथक अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं, जिसमें कम

से कम एक प्रतियोगिता सीनियर वर्ग की हो, में निर्णयन कार्य सम्पन्न किया हो।

**पुरस्कार राशि**

प्रत्येक पुरस्कार की राशि रूपए एक लाख । कुल दो पुरस्कार होंगे, एक निर्णायक एवं एक प्रशिक्षक के लिए, साथ ही ब्लेजर, टाई व प्रशस्ति पत्र एवं प्रतीकचिन्ह प्रदान किया जायेगा।

# शहीद कौशल यादव

शहीद कौशल यादव का जन्म 4 अक्टूबर 1969 को भिलाई में हुआ । वे 3 जून 1989 को सेना में भर्ती हुए । देश की रक्षा के लिए उन्होंने असाधारण साहस एवं दृढ़ इच्छा शक्ति का परिचय दिया । पॉच हजार एक सौ मीटर की ऊचांई एवं माइनस 15 डिग्री तापमान पर उन्हें जूलू टाप कारगिल में विजय प्राप्त करनी थी ।

शहीद नायक कौशल यादव अपनी जान की परवाह किए बिना शत्रुओं के बंकरों पर ग्रेनेट फेकते हुए एवं गोली चलाते हुए आगे बढ़ते गए और शत्रुओं के पॉच सिपाहियों को मार गिराया । इस प्रक्रिया में वह गंभीर रूप से घायल हो गए तथा 25 जुलाई 1999 को कारगिल प्रांत सेक्टर में शहीद हुए लेकिन उनके जीवन के सर्वोच्च बलिदान ने जूलू टाप पर भरतीय सेना का अधिकार सुनिश्चित कर दिया ।

शहीद कौशल यादव को नवम्बर 2000 में वीर चक्र से सम्मानित किया गया है । हम इस शहीद को श्रद्धांजलि अर्पित करते है ।

# शहीद कौशल यादव पुरस्कार वर्ष 2012 : प्रमुख नियम

<u>खिलाड़ी ने विगत तीन वर्षो में निम्नलिखित उपलब्धियॉ प्राप्त की हो –</u>

अ 1. प्रत्येक वर्ष अधिकतम पॉच खिलाड़ियों को यह पुरस्कार प्राप्त होगा तथा एक वर्ष में एक खेल में एक ही पुरस्कार दिया जाएगा ।

ब 1. जूनियर वर्ग की राष्ट्रीय चैम्पियनशिप में पदक प्राप्त किया हो।

या

अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में देश का प्रतिनिधित्व किया हो ।

2.उसने पुरस्कार वर्ष में राष्ट्रीय चैम्पियनशिप (जूनियर या सीनियर वर्ग) या राष्ट्रीय राज्य का प्रतिनिधित्व किया हो ।

3.जिन्हें मध्यप्रदेश सरकार द्वारा जूनियर वर्ग का एकलव्य पुरस्कार प्राप्त हुआ है। वे तभी इस पुरस्कार के पात्र होंगे । जब उन्होंने छत्तीसगढ की ओर से खेलते हुए उपरोक्त उपलब्धियॉ प्राप्त कीहो।

<u>पुरस्कार राशि</u>

प्रत्येक पुरस्कार की राशि रूपए एक लाख, अधिकतम पॉच पुरस्कार दिए जाएंगे, साथ ही ब्लेजर, टाई व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा।

# शहीद लेफ्टिनेंट पंकज विक्रम

शहीद पंकज विक्रम का जन्म 15 जून 1963, कानपुर में हुआ । उनकी शालेय शिक्षा हॉलीक्रास पेंशनबाडा, रायपुर में तथा महाविद्यालयीन शिक्षा शासकीय इंजनियरिंग महाविद्यालय, रायपुर में हुई ।

भारतीय थलसेना में कमांडिंग अफसर के रूप में 1986 में चयन हुआ तथा 1987 में उनकी नियुक्ति 8–इंजिनियरर्स रेजिमेंट में सिकंदराबाद में की गई ।

श्रीलंका में शांति मिशन (1987) में लेफ्टिनेंट पंकज अपनी यूनिट के साथ श्रीलंका गए जहॉ उनका मुख्य कार्य तमिल मुक्ति चिता द्वारा विभिन्न मकानों एवं सड़कों में बिछाई गई बारूदी सुरंगों का पता लगाना तथा उन्हें निष्प्रभावी बनाना था ।

जाफना क्षेत्र के 27 मकानों में लगाए गए 16 अत्याधुनिक विस्फोटकों को अल्प समय में उन्होंने निष्क्रिय कर दिया । 12 अगस्त को सिवन पन्नई भाग में जब ले.पंकज अपने कार्य में मगन थे तभी उन्होंने देखा कमाण्डर मेजर दिलीप सिंह एक घर में बारूदी सुरंगों का अकेले पता लगाने का प्रयास कर रहे हैं तो उनसे रहा न गया और उन्होंने सहायता करने की जिद की जिसे मेजर दिलीस सिंह को मानना पड़ा । परिणाम स्वरूप मेजर दिलीप सिंह, ले.पंकज विक्रम, नायब सूबेदार मुकुन्द राव, नायब सूबेदार पोन्नू स्वामि का यह दल उस मकान में घुसा तभी वहां एक भयानक विस्फोट हुआ । गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद ले.पंकज ने न केवल अपनी चेतना बनाये रखी बल्कि अपनी अवस्था व घावों की परवाह न करते हुए अद्‌भुत धैर्य व अदम्य साहस का परिचय देते हुए अन्य घायलों को अस्पताल पहुंचाने की व्यवस्था की, परंतु कर्तव्य भावना को समर्पित यह सच्च सैनिक अपने कर्तव्यों को दोहराने के लिए हमारे बीच नहीं रह सका और भारतीय सेना के उच्च आदर्शों का प्रतीक यह जवान 14 अगस्त 1987 को शहादत प्राप्त कर शहीद ले.पंकज विक्रम हो गया । भारतीय वायु सेना के विशेष विमान द्वारा ले.पंकज का पार्थिव शरीर रायपुर लाया गया जहॉ सम्पूर्ण सैनिक सम्मान के साथ टिकरापारा कैथेलिक कब्रगाह में दफन किया गया ।

अद्‌भूत शौर्य व अदम्य त्याग का परिचय देने के लिए भारत के महामहिम राष्ट्रपति जी की ओर से ले.पंकज विक्रम को सेना पदक (मरणोपरांत) से सम्मानित किया गया, जिसे उनके माता पिता श्री आर.विक्रम, एवं स्व.जीतेन्द्र विक्रम ने 19 नवम्बर 1988 को अहमदाबाद में समारोह पूर्वक तत्कालीन थलसेना अध्यक्ष जनरल शर्मा के हाथों ग्रहण किया गया ।

# शहीद पंकज विक्रम सम्मान प्रमुख नियम वर्ष 2012–13

1. विचाराधीन पुरस्कार वर्ष में जिन खेलों के खिलाड़ियों को शहीद राजीव पाण्डेय पुरस्कार या शहीद कौशल यादव पुरस्कार के लिए चयनित किया गया है, उन खेलों को छोड़कर पुरस्कार के लिए विचार क्षेत्र में आने वाले अन्य खेलों में पात्रता रखने पर पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे।

2. राज्य खेल संघ इस सम्मान हेतु उस खिलाड़ी के नाम की अनुशंसा करेंगे जो उनकी दृष्टि में राज्य का सीनियर वर्ग का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी है तथा जिसे पूर्व में गुण्डाधूर सम्मान, महाराजा प्रवीरचंद भंजदेव सम्मान तथा इन पुरस्कार नियमों में उल्लेखित कोई अन्य पुरस्कार नहीं मिला है ऐसे खिलाड़ी जिन्हें पूर्व में उपरोक्त पुरस्कार मिल चुके हों उन्हें शहीद पंकज विक्रम सम्मान प्राप्त करने की पात्रता नहीं होगी ।

3. राज्य खेल संघ ऐसे खिलाड़ियों के नाम की अनुशंसा कर सकेंगे, जो इन पुरस्कार नियमों में उल्लेखित शहीद राजीव पाण्डेय पुरस्कार के लिए पात्रता की शर्तों को पूर्ण करते हों या इस खिलाड़ी ने पुरस्कार वर्ष को सम्मिलित करते हुए विगत पांच वर्षों में लगातार सीनियर वर्ग की राष्ट्रीय चैम्पियनशिप में छत्तीसगढ़ की ओर से भाग लिया हो ।

## पुरस्कार राशि

प्रत्येक पुरस्कार की राशि रूपए पच्चीस हजार, पात्रता रखने वाली सभी खेलों में प्रदाय किए जाएंगे, साथ ही ब्लेजर, टाई व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा।

# शहीद राजीव पाण्डेय : जीवनी

शहीद राजीव पाण्डेय का जन्म 11 अप्रेल 1962 को हुआ । जून 1985 में भारतीय सेना में सेंकेड लेफ्टिनेंट के पद पर पदस्थ किए गए । 1987 में उन्हें अन्य आठ जवानों के साथ सीयाचीन ग्लेशियर की चौकी जो कि 24 हजार 500 फीट की ऊचाई पर है तथा पाकिस्तानी कब्जे में थी, उसे भारतीय कब्जे में लेने का काम सौंपा गया ।

शहीद राजीव पांडेय के पहले भी अन्य चार बटालियन के विभिन्न अफसरों को यह काम सौंपा गया था लेकिन वे इसे पूरा नहीं कर सकें । 25 वर्षीय सेकेंड लेफ्टिनेंट राजीव पाण्डेय ने इस कार्य को चुनौती के रूप में लिया और वह रास्ता खोज निकाला जो किसी और अफसर ने नहीं खोजा था । 19 मई 1997 को सेकेंड लेफ्टिनेंट राजीव पाण्डेय सीयाचीन ग्लेशियर स्थित चौकी को कब्जा करने के दौरान शहीद हो गए लेकिन 26 जून को उस चौकी पर भारतीय सेना का कब्जा हो गया । शहीद राजीव पाण्डेय को वीर चक्र से सम्मानित किया गया है । हम इस शहीद को श्रद्धांजलि अर्पित करते है।

# शहीद राजीव पाण्डेय पुरस्कार वर्ष 2012

**खिलाड़ी ने विगत पॉच वर्षो में निम्नलिखित उपलब्धियॉ प्राप्त की हो ।**

अ प्रत्येक वर्ष अधिकतम पॉच खिलाड़ियों को यह पुरस्कार प्राप्त होगा तथा एक वर्ष में एक खेल में एक ही पुरस्कार दिया जाएगा ।

ब सीनियर वर्ग की राष्ट्रीय चैम्पियनशिप में पदक प्राप्त किया हो ।

या

सीनियर वर्ग की अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में देश का प्रतिनिधित्व किया हो ।

स. पुरस्कार वर्ष में छत्तीसगढ राज्य का राष्ट्रीय चैम्पियनशिप या राष्ट्रीय खेल में
प्रतिनिधित्व किया हो ।

द. कम से कम तीन पृथक–पृथक वर्षों में छत्तीसगढ राज्य की ओर से राष्ट्रीय
प्रतियोगिता में भाग लिया हो ।

## पुरस्कार राशि

प्रत्येक पुरस्कार की राशि रूपए दो लाख पच्चीस हजार, अधिकतम पॉच पुरस्कार दिए जाएंगे, साथ ही ब्लेजर, टाई व प्रशस्ति पत्र एवं प्रतीकचिन्ह प्रदान किया जायेगा

# अमर शहीद श्री विनोद चौबे भा.पु.से. (कीर्ति चक्र मरणो उपरांत )

अमर शहीद श्री विनोद चौबे का जन्म सन् 22 अप्रेल 1960 मे छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिले मे हुआ। पिता का नाम श्री द्वारिका प्रसाद चौबे, माता का नाम श्रीमती कमला देवी चौबे, पत्नी का नाम श्रीमती रंजना चौबे जिनके साथ सन् 1986 मे विवाह हुआ। स्व. श्री चौबे जी का एक पुत्र शौमिल रंजन चौबे हैं। शहीद श्री विनोद चौबे ने रसायन शास्त्र मे सन् 1981 मे एम.एस.सी. की शिक्षा शासकीय विज्ञान महाविद्यालय बिलासपुर व सी.एम.डी. महाविद्यालय बिलासपुर से प्राप्त किया। श्री चौबे का सन् 1983 मे राज्य पुलिस सेवा में उप–पुलिस अधीक्षक के पद पर चयनित हुए। तदपश्चात छत्तीसगढ़ के साथ–साथ मध्यप्रदेश के अनेक जिलो मे अनुविभागीय अधिकारी पुलिस, नगर पुलिस अधीक्षक डिप्ती कमाण्डेंट एवं पुलिस अधीक्षक के पद पर शहर रायपुर के दौरान पदोन्नत कर भारतीय पुलिस सेवा संवर्ग प्रदान किया गया था। इस तरह पुलिस अधीक्षक रहते हुए छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलो का कमान सम्भाले अंतिम पुलिस अधीक्षक के रूप मे राजनांदगाव जिले का कमान संभाले, राजनांदगाव के मानपुर के जंगलो मे नक्सलियो से लड़ते हुए दिनांक 12 जुलाई 2009 को शहीद हो गए। शहीद श्री चौबे को मरणो उपरांत कीर्ति चक्र से दिनांक 18 मार्च 2011 को महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती पटिभा पाटिल के हाथो रक्षा अलंकरण समारोह मे श्री चौबे की पत्नी श्रीमती रंजना चौबे को प्रदाय किया गया।

शहीद विनोद चौबे सम्मान वर्ष 2012 : प्रमुख नियम

1. प्रत्येक वर्ष पात्रता रखने वाले पॉच खेल विभूतियों को प्रदान किया जाएगा।

2. यह खिलाड़ी या प्रशिक्षक को दिया जाएगा ।

3. संबंधित की उम्र 55 वर्ष या अधिक हो ।

4. वह निरंतर खेल के क्षेत्र में खिलाड़ी के रूप में या प्रशिक्षण कार्य में सलग्न रहा हो ।

5. उसे खेल के क्षेत्र में पूर्व में विभाग द्वारा कोई पुरस्कार नहीं दिया गया हो ।

6. संबंधित ने अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता में भाग लिया हो या राष्ट्रीय प्रतियोगिता में पदक प्राप्त किया हो या संबंधित ने ऐसी कोई उल्लेखनीय सेवा खेल के क्षेत्र में की हो, जिसके आधार पर उन्हें सम्मानित किए जाने हेतु विचार किया जाए।

पुरस्कार राशि

प्रत्येक पुरस्कार की राशि रूपए पच्चीस हजार, अधिकतम पॉच पुरस्कार दिए जाएंगे, साथ ही साल श्रीफल से सम्मानित किया जायेगा।